प्राक्कथन

प्राक्कथन

प्रेरणा एवं विषय चयन :

मुझे हिंदी विषय के प्रति लगाव बी.ए. की पढ़ाई के दौरान हुआ। इसीलिए मैंने बी.ए. भाग–३ में हिंदी विषय को स्वतंत्र रूप से चुना। बी.ए. भाग–३ में पढ़ते समय में ही मुझे अनुसंधान के प्रति रूचि उत्पन्न हो गई। इसीलिए मैंने एम्.ए. शिवाजी विश्वविद्यालय में किया। एम्. ए. की पढ़ाई के दौरान कथा साहित्य में मेरी रूचि बढ़ती गई। अध्यापक एवं सहेलियों के संपर्क परिणाम स्वरूप अनुसंधान के प्रति रूचि और भी गहरी हो गई। इसी रूचि के फलस्वरूप 'नमक का दरोगा', 'कफन', 'पूस की रात', 'आकाशदीप', 'चीफ की दावत' एवं मार्कण्डेय की 'मानक कहानियाँ' आदि का अध्ययन किया। इसी बीच मेरी मुलाकात डॉ. एस्. एन्. अंतरेड्डी जी से हुई। जो हमें एम्.ए. में पढ़ाती थी। उनकी प्रेरणा से ही मेरी इस विषय में रूचि बढ़ने लगी। हिंदी साहित्य क्षेत्र में उपन्यास, नाटक, काव्य, कहानी आदि विधाएँ विकसित हुई। इन विविध विधाओं में कहानी विधा सन् १९०० से अब तक बहुचर्चित रही है। कथा साहित्य के विकास में प्रेमचंद से लेकर अब तक के विविध कहानीकारों ने अपना मौलिक योगदान दिया है। इन्हीं कहानीकारों के अंतर्गत कथा साहित्य के विकास में कृष्णा सोबती का भी महत्त्वपूर्ण योगदान रहा है। भारतीय समाज में स्थित नारी जीवन साहित्यकारों के साहित्य का विषय रहा है। परिवार, समाज, विविध सेवा क्षेत्र आदि में नारी का जीवन आज के साहित्यकारों का ही नहीं बल्कि लोगों की चर्चा का भी विषय बना है। ऐसे समय में कृष्णा सोबती ने अपने साहित्य में नारी को केंद्र में रखकर साहित्य रचना की। उनकी अधिकतर कहानियों

में नारी के दुख–दर्द, वेदना, पीड़ा, अत्याचार, पारिवारिक संघर्ष आदि समस्याओं का चित्रण अधिक मात्रा में हुआ है। स्वातंत्र्योत्तर सशक्त महिला रचनाकारों में कृष्णा सोबती का नाम अग्रणी है। उन्होंने अपने लेखन के बल पर कथा साहित्य में लेखिकाओं में महत्त्वपूर्ण स्थान निर्माण किया है। वह एक संवेदनशील, सशक्त महिला रचनाकार है। हिंदी साहित्य में उनका एक महत्त्वपूर्ण स्थान है। उन्होंने विविध विषयों तथा कहानी, उपन्यास, चरित्र रचन एवं संस्मरण आदि विधाओं में अपनी प्रतिभा का परिचय दिया है। उनके समस्त उपन्यासों एवं कहानियों में नारी जीवन की विविध समस्याओं का यथार्थ चित्रण दृष्टिगोचर होता है। यही कारण है कि उनकी कहानियों एवं उपन्यासों का केंद्रबिंदू नारी ही रही है। जब मैंने कृष्णा सोबती का 'बादलों के घेरे' कहानीसंग्रह पढ़ा तब मैं उससे प्रभावित हुई। साथ ही मैंने यह तय किया कि 'बादलों के घेरे' कहानीसंग्रह को लेकर ही शोध–कार्य करूँगी। अतः मैंने अपनी शोध–निर्देशिका आदरणीय गुरूवर्य डॉ. एस्. एन्. अंतरेड्डी जी से विचार–विमर्श के पश्चात् तथा उनके सुझावों के अनुसार लघु–शोध–प्रबंध के लिए "कृष्णा सोबती के 'बादलों के घेरे' कहानीसंग्रह का अनुशीलन" इस विषय पर शोध कार्य करना निश्चित किया।

अनुसंधान के पूर्व उपस्थित प्रश्न :

प्रस्तुत विषय पर अनुसंधान के दौरान मेरे सामने निम्नलिखित प्रश्न उपस्थित हुए।

1. कृष्णा सोबती की कहानियों का कथ्य क्या है ?
2. कृष्णा सोबती की कहानियों का मूल विषय क्या है ?
3. कृष्णा सोबती ने अपनी कहानियों में किन समस्याओं को चित्रित किया है ?

4. कृष्णा सोबती ने अपनी कहानियों में नारी जीवन का चित्रण किस प्रकार हुआ है ?
5. कृष्णा सोबती ने अपनी कहानियों में नारी जीवन की कौन–सी समस्याओं का चित्रण किया हैं ?
6. कृष्णा सोबती की कहानियों के पात्र किसप्रकार का संघर्ष करते है ?
7. कृष्णा सोबती की कहानियों में पारिवारिक जीवन का चित्रण किस प्रकार किया है ?

लघु शोध–प्रबंध की सीमा एवं व्याप्ति :

हर शोध–प्रबंध की अपनी सीमा और व्याप्ति होती है । इसके सामंजस्य से ही शोध–कार्य सरलता से संपन्न हो जाता है। अध्ययन की सुविधा के लिए मैंने अपने लघु शोध–प्रबंध को निम्नलिखित अध्यायों में विभाजित कर प्रस्तुत विषय का विवेचन–विश्लेषण किया है –

प्रथम अध्याय : "कृष्णा सोबती का संक्षिप्त परिचय"

प्रस्तुत अध्याय के अंतर्गत कृष्णा सोबती के व्यक्तित्व एवं कृतित्व का संक्षिप्त में विवेचन प्रस्तुत किया गया है। उनके संक्षिप्त परिचय में जन्म, परिवार, शिक्षा, रहन–सहन आदि का विवेचन किया है। साथ ही उनके व्यक्तित्व के विभिन्न पहलुओं के अंतर्गत स्पष्टवादिता, निड़रता आदि का विश्लेषण किया गया है। उनके कृतित्व में कहानी, उपन्यास, संस्मरण, साहित्यिक लेख आदि का संक्षिप्त में विवेचन किया है । साथ ही उन्हें प्राप्त विविध पुरस्कारों का भी विवेचन प्रस्तुत अध्याय के अंतर्गत किया है। उपर्युक्त विवेचन के बाद अंत में निष्कर्ष प्रस्तुत किए है।

द्वितीय अध्याय : "विवेच्य कहानियों की विषयवस्तु का विवेचन"

द्वितीय अध्याय में विषयतत्त्व तथा कथावस्तु का महत्त्व बताया गया है। इसमें कहानी की परिभाषा, भारतीय तथा पाश्चात्य विद्वानों ने की कहानी की परिभाषा को स्पष्ट किया हैं। साथ ही कहानी के तत्त्वों का विवरण दिया गया है और कथावस्तु का विश्लेषण भी किया गया है। इसमें कथावस्तु का अर्थ एवं परिभाषा को स्पष्ट किया है। 'बादलों के घेरे' कहानीसंग्रह में संकलित सभी कहानियों का विषयवस्तु परक अध्ययन इस अध्याय के अंतर्गत किया है। अंत में निष्कर्ष प्रस्तुत किए है।

तृतीय अध्याय : "विवेच्य कहानियों में प्रतिबिंबित स्त्री–पुरुष पात्र"

इस अध्याय में नारी के विविध रूप तथा नारी की विशेषताओं का अध्ययन किया गया है। साथ ही समाज में नारी का स्थान किसप्रकार है इसका विवेचन दिया गया है। नारी के विविध रूप जैसे–माँ, बेटी, पत्नी, सास, बहू आदि का विश्लेषण किया गया है। प्रमुख नारी पात्रों के साथ– साथ प्रमुख पुरुष पात्रों का भी विवेचन इस अध्याय के अंतर्गत किया है। पुरुष के विविध रूप तथा उनकी विशेषताओं का विवेचन किया गया है। अध्याय के अंत में प्राप्त निष्कर्ष दिए है।

चतुर्थ अध्याय : "विवेच्य कहानियों में चित्रित समस्याएँ"

इस अध्याय के अंतर्गत समस्या शब्द का अर्थ, व्युत्पत्ति आदि का विवेचन किया है। विवेच्य कहानीसंग्रह में चित्रित सभी समस्याओं का विश्लेषण किया है। समस्याओं को सामाजिक, राजनीतिक, आर्थिक, धार्मिक आदि में विभाजित

कर उनके अंतर्गत आनेवाली विभिन्न समस्याओं का विवेचन किया है। अध्याय के अंत में उपलब्धि तथ्यों के आधार पर निष्कर्ष दिए है।

पंचम अध्याय : "विवेच्य कहानियों की भाषा शैली"

पंचम अध्याय में भाषा का स्वरूप, भाषा के महत्त्व को स्पष्ट किया गया है। साथ ही कहानी में भाषा के विविध रूपों का चित्रण भी किया गया है। और विभिन्न शब्द प्रयोग के अंतर्गत संस्कृत शब्द, अरबी, फारसी, अंग्रेजी, द्विरूक्ति शब्द, संयुक्त शब्द आदि का प्रयोग कैसे हुआ है यह दिया गया है। साथ ही कहानी में प्रयुक्त मुहावरें, प्रतीक, बिंब आदि को स्पष्ट किया गया है। उपरांत भाषा की विशेषताओं का विवेचन किया गया है। विवेच्य कहानियों में चित्रित विभिन्न शैलियों का विश्लेषण किया है। अंत में निष्कर्ष प्रस्तुत किए है।

अंत में 'उपसंहार' दिया है। अध्यायों में प्राप्त तथ्यों को प्रबंध के अंत में पूर्व विवेचित अध्यायों में प्राप्त तथ्यों के आधार पर निकाले गए निष्कर्ष दर्ज किए है। साथ ही उपलब्धियाँ तथा अध्ययन की नई दिशाएँ भी प्रस्तुत की है। अंत में आधार ग्रंथ–सूची एवं संदर्भ ग्रंथ सूची दी है।

प्रस्तुत लघु शोध–प्रबंध की मौलिकता :

1. कृष्णा सोबती के 'बादलों के घेरे' कहानीसंग्रह को केंद्रबिंदू बनाकर इस लघु शोध–प्रबंध में स्वतंत्र रूप से प्रथमतः ही अनुसंधान संपन्न हुआ है।
2. प्रस्तुत लघु शोध–प्रबंध में विवेच्य कहानीसंग्रह का सूक्ष्मता से अध्ययन कर कहानियों में चित्रित समस्याओं का अध्ययन किया है।

3. प्रस्तुत लघु शोध–प्रबंध में देश विभाजन के समय की स्थिति का वर्णन यथार्थ रूप से किया है।
4. विभिन्न स्तर से जुड़ी नारी जीवन तथा समस्याओं को चित्रित किया है।

.....

ऋणनिर्देश

किसी भी महत्त्वपूर्ण कार्य की पूर्ति हेतु बहुत सारे लोगों की प्रेरणा, सहयोग होना जरुरी होता है। मेरे इस लघु शोध-प्रबंध की पूर्ति हेतु मेरी प्रत्यक्ष अथवा अप्रत्यक्ष रूप से सहायता करनेवाले गुरूजनों एवं सहयोगियों के प्रति कृतज्ञता ज्ञापित करना मैं केवल एक औपचारिकता न समझकर अपना परम कर्तव्य समझती हूँ।

प्रस्तुत लघु शोध-प्रबंध लेखन निर्देशिका गुरूवर्या डॉ. एस्. एन्. अंतरेड्डी जी के निर्देशन में हुआ है। इसे मैं अपना सौभाग्य समझती हूँ। आपके सहयोग, निरंतर प्रेरणा और सुयोग्य निर्देशन का फल है। आपका मिलनसार व्यक्तिमत्व, प्रोत्साहन मुझे सदा प्रेरित करता रहा है।

इसके साथ ही आदरणीय गुरूवर्या प्रो. डॉ. पद्मा पाटील जी (अध्यक्षा, हिंदी विभाग, शिवाजी विश्वविद्यालय, कोल्हापुर) ने भी मौलिक मार्गदर्शन किया। गुरूवर्य प्रो. अर्जुन चव्हाण जी ने मौलिक मागदर्शन एवं सहयोग प्रदान किया। श्रद्धेय गुरूवर्य डॉ. पी. एस्. पाटील जी (भुतपूर्व अध्यक्ष, हिंदी विभाग, शिवाजी विश्वविद्यालय, कोल्हापुर) ने भी इस लघु शोध-प्रबंध के लिए सदैव मुझे प्रोत्साहित एवं प्रेरित किया। आदरणीय गुरूवर्या डॉ. शोभा निंबालकर, डॉ. भारती शेलके मॅडम जी ने स्नेहपूर्वक मागदर्शन किया है। साथ ही लवटे सर, काशिद सर, खर्डे सर आपने अपने कार्यों में व्यस्त रहने के बावजूद भी समय-समय पर मुझे प्रोत्साहित कर अनेक मौलिक सुझाव दिए तथा मेरी कईं समस्याओं को हल किया। आपका यह

स्नेहयुक्त तथा आत्मीयपूर्ण सहयोग मुझे हमेशा याद रहेगा। मैं आपके प्रति हमेशा कृतज्ञ रहूँगी।

मेरे जीवन मुझे हमेशा आगे बढ़ने की प्रेरणा देनेवाले आदरणीय एवं श्रद्धेय माताजी तथा पिताजी के आशीर्वाद के बिना यहाँ तक पहुँच पाना संभव नहीं था। मेरे इस कार्य में सदैव प्रेरित करनेवाली मेरी बड़ी बहन स्मिता (ताई), छोटे भाई अनिकेत, प्रियांत, प्रथमेश, योगेश तथा माई–काकाओं, मामा–मामीयों, नानी का वात्सल्य तथा विश्वास मुझे हमेशा प्रेरित करता रहा। इस पूरे परिवार को ऋण के शब्दों में बाँधकर औपचारिकता निभाने के बजाय मैं आपके ऋण में सदैव रहना पसंद करुँगी।

इस लघु शोध प्रबंध की पूर्ति में मनीषा, माधुरी, रुपाली, सुनिता, गीता, सीमा, प्राजक्ता, संजीवनी, सरिता, प्रियांका, प्रतीक्षा, घनश्याम, संतोष, अरिफ महात, नवनाथ पाटील, शंकर पाटील आदि द्वारा मिले सहयोग एवं परामर्श से भी मैं लाभान्वित हुई हूँ। अतः इन सभी के प्रति मैं स्नेहभाव प्रकट करती हूँ।

प्रस्तुत लघु शोध प्रबंध के लिए आवश्यक सामग्री संकलन मुझे बालासाहेब खर्डेकर ग्रंथालय, शिवाजी विश्वविद्यालय, कोल्हापुर और महावीर महाविद्यालय, कोल्हापुर से प्राप्त हुई। इन ग्रंथालयों के ग्रंथपाल और सभी कर्मचारियों के प्रति कृतज्ञता ज्ञापित करती हूँ।

प्रस्तुत लघु शोध–प्रबंध का टंकण प्रभावी, कलात्मक एवं सुचारू रूप से संपन्न करने में पिताजी तथा मनीषा ने मुझे सहयोग दिया इसीलिए मैं आभारी हूँ।

साथ ही जिन ज्ञात अज्ञात तथा परिचित–अपरिचितों की शुभकामनाएँ एवं आशीर्वचन मुझे प्राप्त हुए हैं उन सब के प्रति मैं आत्मीयपूर्ण भाव से कृतज्ञता प्रकट करती हुए लघु शोध प्रबंध को परीक्षणार्थ प्रस्तुत करती हूँ।

शोध–छात्रा

(सुश्री. सारिका राजाराम कांबळे)

स्थान – कोल्हापुर

तिथि – 20-05-2009

प्राक्कथन